"चेतना-समरथ गुरु"

- "चेतना है तउ चेत लै निसि दिन मै प्रानी। छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ।1। रहाउ । हरि गुन काहि न गावहि मूरख अगिआना। झूठै लालचि लागि कै नाहि मरनु पछाना ।1। अजहू कछु बिगरिओ नही जो प्रभ गुन गावै। कहु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै ।2। जाग लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल सोइआ । जो तन उपजिआ संग ही सो भी संग न होइआ ।1। रहाउ । मात पिता सुत बंध

जन हितु जा सिउ कीना । जीउ छूटिओ जब देह ते डारि अगनि मै दीना ।1। जीवत लउ बिउहारु है जग कउ तुम जानउ । नानक हरि गुन गाइ लै सभ सुफन समानउ ।2।2। हरि जसु रे मना गाइ लै जो संगी है तेरो । अउसरु बीतिओ जातु है कहिओ मान लै मेरो ।1। रहाउ । संपति रथ धन राज सिउ अति नेहु लगाइओ । काल फास जब गलि परी सभ भइओ पराइओ ।1। जानि बूझ कै बावरे तै काजु बिगारिओ । पाप करत सुकचिओ नहीं नह गरबु निवारिओ ।2। जिह बिधि गुर उपदेसिआ सो सुन रे भाई । नानक कहत पुकारि कै गहु प्रभ सरनाई" ।3। (9-726-727)

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

RECORDING NOT AVAILABLE